

गज़नी-दरवाजा (1030 ई०)

मूल रूप से यह दरवाज़ा गज़नी स्थित महमूद गजनवी के मकबरे में लगा था। उसकी मृत्यु 1030 ई० में हुई, 1842 में गज़नी से अंग्रेज यह दरवाज़ा उखाड़ लाये। गवर्नर-जनरल लॉर्ड ऐलनबरो की ऐतिहासिक घोषणा में यह कहा गया कि यह चन्दन का वही दरवाज़ा है जिसे महमूद 1025 में सोमनाथ से लूट ले गया था और इस प्रकार अंग्रेजों ने 800 वर्ष पुराने अपमान का बदला ले लिया है। यह झूठ भारतीय जनासाध गारण की सद्भावना प्राप्त करने के लिए गढ़ा गया था। वास्तव में यह दरवाज़ा गज़नी की स्थानीय देवदार की लकड़ी का है, चन्दन का नहीं। इसका अलंकरण प्राचीन गुजराती काष्ठ-कला से सर्वथा भिन्न है। इसके ऊपरी भाग पर अरबी में एक अभिलेख भी खुदा है जिसमें महमूद का बिस्मदों सहित स्पष्ट उल्लेख है। इस आशय का—इस घटना और दरवाज़े के वर्णन सहित एक नोटिस-बोर्ड सर जॉन मार्शल ने यहाँ पहले भी लगाया था।

यह दरवाजा 16-1/2 फीट चौड़ा है। इसका वज़न लगभग आधा टन है। यह ज्यामितिक, ताराशुपक, षष्टकोणीय और अष्टकोणीय फलकों को, फ्रेम में, एक-दूसरे के साथ जोड़कर कीलों के बिना बनाया गया है।

अन्त में इस दरवाज़े को सोमनाथ में दुबारा लगाने का विचार त्याग दिया गया और यह इस कमरे में पड़ा रह गया। इसका मुग़लों या उनके इस किले से कोई संबंध नहीं है और यह यहाँ या तो 1842 के अंग्रेज अभियान के विजय-चिन्ह के रूप में या ईस्ट इण्डिया कम्पनी के ऐतिहासिक झूठ की स्मृति-स्वरूप शेष रह गया है।



GHAZNIN-GATE (1030 A.D.)

This gate originally belonged to the tomb of Mahmud Ghaznavi at Ghazni. He died in 1030 A.D. It was brought from there by the British in 1842. It was claimed, in the historic proclamation of Lord Ellenborough, the Governor-General, that these were the sandal-wood gates of Somnath which Mahmud had taken to Ghaznin in 1025, and the British had thus avenged an insult of 800 years back. This false claim was made just to win the goodwill of the Indian people. The gate is, in fact, made of local *Deodar* wood of Ghaznin and not of sandalwood. The style of decoration bears no resemblance to ancient gujarati wood work. There is also an Arabic inscription carved on the upper side. It mentions Mahmud with his epithets. Sir John Marshall had placed here a notice-board which described the whole episode and this gate.

It is 16-1/2 feet high and 13-1/2 feet broad and its weight is about half a ton. It is made up of geometrical, hexagonal and octagonal panels which have been fixed, one with the help of the other, into the frame, without rivets.

The idea to restore it at Somnath was ultimately given up and the gate was abandoned. Since then, it is stored in this room, in no way is it related to this fort, or the Mughals, and it is lying here either as a war trophy of the British Campaign of 1842, or as a sad reminder of the historic lies of the East India Co.

